दिनांक 11-02-1975 की अव्यक्त वाणी
पर आधारित मुरली कविता

माया से युद्ध करने वाले पाण्डवों के लिए धारणाएं
व
ग्लानि को गायन समझकर रहमदिल बनो

पाण्डव पति शिवबाबा बच्चों को पाण्डव बनाते
माया से युद्ध जीतने के लिए धारणाएं सिखलाते

विघ्नकारी संस्कारों को सम्पूर्ण रूप से गलाओ
संस्कार परिवर्तन की महसूसता सबको कराओ

सहजयोगी श्रेष्ठ योगी बनने का मोल चुकाओ
औरों को श्रेष्ठ आत्मा होने का अनुभव कराओ

कर्मयोगी गुणमूर्त का सेम्पल खुद को बनाओ
सबके मन में पुरुषार्थ का उमंग उत्साह जगाओ

आराम के साधन पाकर आराम कभी ना करना
सच्ची साधना के लिए साधनों का त्याग करना

अपनी तकदीर का सितारा सदा चमकाते जाओ
घटनाओं की घटा के मध्य खुद को ना छिपाओ

फॉलो फादर करते हुए अपनी तक़दीर बनाओ
बाप समान विश्व कल्याण अर्थ संकल्प जगाओ

बेहद के मालिकपन के संग बनो विश्व सेवाधारी
अधिकारीपन के नशे संग बनो सर्व के सत्कारी

ग्लानि करे कोई तो समझना उसे कल्याणकारी
घृणा करने वाले प्रति भी हो रहम भावना हमारी

औरों को आगे बढ़ाने की शुभ भावना जगाओ
तक़दीरवान और विश्व कल्याणकारी कहलाओ

पहले जन्म का लक्ष्य है तो लक्षण वैसे बनाओ
लक्ष्य प्रमाण अपना पुरुषार्थ चेक करते जाओ